4. महीं pro भुवं A. B. C. मत्सुत: A. B. C. 6. तस्य A. s. m. et Mallinátha. बभूव दु:प्रापं A. Post 6. दिनेषु गच्छत्सु मधूकपांडुरं तदीयमाश्याममुखं स्तनद्वयं। समुन्नमो वारणदंतकोशयोर्बभार कांतिं गवलापिधान्ययो: ॥ A. 9. 8. A. C. 9. भ्रमरावलीढयो: A. C. °लीन° B. 12ª. अधिष्ठिते A. B. C. गर्भवेश्मनि A. B. C. गर्भकर्मणि a M. memoratur. 13ᵇ. अक्षतं A. Post 16. स वीक्ष्य पुत्रस्य चिरात्पिता मुखं निधानकुंभस्य युवेव दुर्गत:। मुदा शरीरे प्रबभूव नात्मन: पयोधिरिंदूदयमूर्छितो यथा॥ A. 19ª. °नृत्तै:. 24. न व्यहीयत A. B. C. 25. °शिष्यया। पितुर्मुदं तेन शिशुस्ततान स: A. 28. वृत्तचूल° A. C. 30. पवनातिवर्तिभि: A. 31. मंत्रवित् A. 32ᵇ. गंभीर° A. B. 33. तमोपहं A. B. C. 37. दुरासह: A. 39. अत: परं A. B. रक्षतां A. B. 41. नि:स्यंद A. निष्यंद B. 44. यतो pro सदा A. B. 45. सता pro सदा A. 46. शुते: pro शुचे: B. 50. अनुसारिणा B. et uterque commentarii codex. 51. तत: प्रहस्याह पुन: पुरंदरं व्यपेतभीर्भूमिपुरंदरात्मज:। A. गर्वे pro सर्गे A. B. C. 53. मार्गणं pro सायकं A. C. 55. शचीपवल्लताक्रियोचिते A. B. C. 56ª. मयूरपक्षमणा A. B. C. 57ᵇ. तुमलं B. C. et M. 60. व्यपरोपणोद्धतं A. C. व्यपरोपणोद्धृतं B. 61ᵇ. च व्यथां A. निस्वनै: A. C. 62. विधीयते A. 63ª. अभंगम° A. 63ᵇ. अवेहि A. C. किमिच्छसीति तमाह A. 64. असमग्रनिसृतं A. °नि:सृतं C. दिलीपसूनु: A. 65ᵇ. °प्रयतश्च मनु° A. 68. हर्षजडेन A. B. et M. हर्षचलेन C.

Liber IV.

Pro dist. secundo A. B. C. hoc inserunt: न्यस्तशस्त्रं दिलीपं च तं च शुश्रुवुषां पतिं। राज्ञामुद्धतनाराचे हृदि शल्यमिवार्पितं॥ 3ᵇ. सुप्रजा: B. 4ᵇ. चैत्यं A. Post dist. 7. A. secundum Mallináthae collocat, proxima vero ita invertit: 10. 9. 8. C. vero: 8. 13. 12. 10. 9. 13. °दर्शिन: A. B. C. 14. लभ्यप्रशमनं A. Post 14. hoc dist. in A. inseritur: निर्विष्टलघुभिर्मेघै: सवितुस्तस्य चोभयो:। वर्धिष्णवो दिशां भागान् प्रतापा यत्र रेचिता:॥ distichon vero genuinum pro varia lectione (पाठांतर) datur. B. C. post d. 15, A. vero post d. 16. hoc inserunt: अधिज्यमायुधं कर्तुं समयोऽयं रघोरिति। स्वं धनु: शंकितेनेव संजह्रे (संहृतं A.) शतमन्युना॥ 16. पर्यायोद्यतकार्मुकौ A. B. C. et Mallinátha, qui etiam alteram lectionem, a Stenzler perperam receptam, exstare dicit. 17. विलसत्कासचामर: A. C. Pro d. 20. quod in margine tantum exstat, A. hoc: तस्य गोमुद्भिरेफाणां कर्णोत्पलनिपातिनां। स्वरसंवादिभि: कंठै: शालिगोप्यो जगुर्गुणान्॥ Pro कथोद्घातं M. aliam laudat lectionem कथोद्भूतं. 25. सम्यक् तस्यै हुतो वह्नि: A. 26. मूलपर्यंत: A. B. C. 29. स्यंदनोत्कीर्णै: A. तुरगोत्कीर्णै: B. Post dist. 29. in B, at in C. post d. 31. hoc additur: पुरोगै: कलुषास्तस्य सह प्रस्थायिभि: कृशा:। पश्चात्प्रयायिभि: पंकाश्चक्रिरे मार्गनिम्नगा:॥ idque distichon in commentario codicis B. explicatur, non vero in E. 30. 31. A. 30. पुरोगास्तदनंतरं A. B. C. पश्चाद्रयानीकं A. B. C, eaque lectio etiam a M. laudatur. 37. प्रवणा: pro प्रणता: B. 38. उत्कलादेशितपथ: A. B. °भिमुखं A. Pro कपिशां a nonnullis करभां lectum esse M. tradit. Post 41. A. B. C. hoc distichon inserunt, quod etiam in codice E. explicatur: वायव्यास्त्रविनिर्भूतात्पक्षविद्धान्महोदधे:। गजानीकात्स कालिंगं तार्क्ष्य: सर्पमिवाददे॥ 42. दलैस्तस्य A. यश: वपु: A. C. 46ᵇ. मरीच° B. Post d. 46. in A, post 47. in C. hoc inseritur, et in commentario E. post 47. explicatur: आजानेयखुरक्षुण्णपक्कलाक्षेत्रसंभवं। व्यानशे सपदि व्योम कीटकोशाविलं रज:॥ Pro d. 47. C. distichon 54. ponit. 53. रामेषूत्सारि° A. 54. in A. deest. 55. मरुलां C. मुरचीं lectionem M. laudat. 56. संजितै:, quod a radice सज् derivandum, et A. habet et M. laudat. मर्मर: pro वर्मभि: A. C. 57ª. °वद्धानां A. 62. तुमुल: A. C. Post d. 66. hoc additur in A. B: जितानजय्यस्तानेव कृत्वा रघुपुर:सरान्। महार्णवमिवौर्वाग्नि: प्रविवेशोत्तरापथं॥ idem in C, nisi quod initio ita legitur: जितानजय्य: काकुत्स्थ:. 67. वंक्षूतीर° A. वंकू° C. 69. अक्षोडै: B. C. Uterque commentarii codex अंकोलै: habet. 70. विविशुस्तं विशां नाथमुदन्वंतमिवापगा:॥ A. C. 72. सत्वानां pro सिंहानां B. गुहागतानां सिंहानां C. 77ª. विमर्द: सह तैस्तत्र - - °नल: A. तत्र युद्धं C. 78. शरैरुच्छिन्नसंकेतान्. 79. परस्परस्य A. B. C. 82ª. °वर्षि A. C. 85. विश्रमयन् A. B. et Mallinátha. 86. विश्वजितमारेभे A. B. C.

Liber V.

4ᵇ. चैतन्यमुग्रादिव दीक्षितेन A. B. C. 5ª. यद्वन्निणो धैर्यविलोपि तन्नं A. B. 11ª. अनुग्रहेणाभिगमस्थितेन तवार्हतस्तुष्यति मे न चेत: A. 12. दुर्बलाश: प्रत्याह कौत्सस्तमपेतकुत्सं A. 20. अवाप्तविद्येन A. 25. महितो A. B. 26. तां गिरं pro संगरं A. B. C. quod etiam a M. laudatur. शृंगं सुमेरो: A. B. C. etiam Mallináthae notum. 32. मनीषी pro महर्षि: A. B. वाक्यं pro वाचं B. 34ᵇ. ईड्य: A. B. C. 35. आलोककामात् B. चैतन्यं a quibusdam pro आलोकं lectum esse M. refert. 39. कृथकैशिकानां B. 41. कौर्णांतरा pro वन्येतरा A. 43. निर्धूतदानामलगंडलेखो A. निर्धूत etiam in B. 44. वृष्यवतस्तटेषु A. 45. सहसा तरंगान् A. Deinde in A. C. hoc distichon inseritur: स भोगिभागाधिकपीवरेण संवेष्टिताङ्घ्रप्रसृतेन (संवेष्टितोङ्घ्रप्रहरेन C.) दीर्घान्। चिक्षेप तीराभिमुख: सशब्दं हस्तेन वारीपरिघानिवोर्मीन्॥ Aliud dist. in A. C. post d. 46. additur: कारंडवोत्सृष्टमृदुप्रवाला: (प्रताना: C.) पुलिंदयोषांबुविहारकांची:। कर्षन् स सेवाललता नदीष्ण: (शैवाल C.) प्रोहावलग्नास्तटमुत्ससर्प (lege प्रोहाव°. प्रवाहलग्ना° C.)॥ 47. हृदा-